फ्लॉरेंस कैली

लेखन: कैरल सैलर

चित्र: कैन ग्रीन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फ्लॉरेंस कैली

लेखन: कैरल सैलर

चित्र: कैन ग्रीन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

परिचय

बात बहुत पुरानी नहीं है कि जब अमरीकी बच्चे भी हर दिन काम करने जाया करते थे। और ये काले गुलाम बच्चे भी नहीं थे। इसके बावजूद उनमें से कुछ का जीवन गुलामी-सा था।

कुछ बच्चे कारखानों में अल्ल सुबह से लेकर देर रात तक खटते थे। तो कुछ दूसरे बरसात हो या चिलचिलाती धूप, खेतों में रूई या तम्बाकू के पत्ते चुनने का काम करते। वे सप्ताह में छह दिन बारह घंटों तक काम करते थे। वे पढ़ने के लिए स्कूल नहीं जाते थे। उन्हें खेलने का वक्त भी बिरले ही मिलता था। वे अक्सर थके और बीमार होते थे। इनमें से कुछ की उम्र तो महज 5 साल की थी।

ऐसा कैसे हो रहा था? क्योंकि ऐसे कई कानून हैं जो कहते हैं कि बच्चों से काम नहीं कराया जा सकता। कुछ दूसरे कानून कहते हैं कि बच्चों को स्कूल पढ़ने जाना चाहिए। पर 1891 में ऐसे कानून थे ही नहीं। पर उसी साल शिकागो में रहने वाली एक महिला ने उन घरों और कारखानों में जाना शुरू किया जहाँ गरीब लोग रहते और काम करते थे। हालात जान-समझ कर उसने तय किया कि इस मसले पर कुछ करना ही होगा। यह स्त्री थी फ्लॉरेंस कैली।

जब फ्लॉरेंस कैली सात साल की थी, उसने इंग्लैण्ड के गरीब बच्चों के बारे में एक किताब पढ़ी।

ये बच्चे स्कलू नहीं जाते थे।

वे फ्लॉरेंस की तरह खेल नहीं सकते थे।

किताब के चित्रों में उन्हें गीली मिट्टी का बोझा ढ़ोते दिखाया गया था।

फ्लॉरेंस को ये बच्चे डरावने बौनों से नज़र आए थे।

किताब ने फ्लॉरेंस को बेहद दुखी कर दिया।

बाद में जब फ्लॉरेंस 12 बरस की हुई उसके
पिता उसे एक बड़े से काँच कारखाने में ले गए।

वे दोनों खड़े हो बड़ी भट्टियों को देख रहे थे
जिनमें आग लपलपा रही थी।

कुछ पुरुष जो काँच को फूँक मार कर फुला रहे थे
वे भट्टियों के करीब ही खड़े थे।

उनके चेहरे राख के कारण काले हो चुके थे और
वे पसीने से तरबतर थे।

तब फ्लॉरेंस की नज़र बच्चों पर पड़ी।

छोटे-छोटे लड़के लपलपाती भट्टियों के पास बैठे थे।

उनका काम था ताज़ी बनी बोतलों को उठाकर
दौड़ना और उन्हें रख भाग कर वापस लौटना।
ये बोतलें बेहद गर्म थीं।

बच्चे मैले-कुचैले और सहमे से लग रहे थे।

फ्लॉरेंस को उन्हें देख दुख हुआ और उनके लिए डर
भी लगा।

फ्लॉरेंस बचपन में अक्सर बीमार रहती थी। इसलिए वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जा सकी।

पर उसने घर पर ही किताबें पढ़ीं।

जब वह बड़ी हो गई तब वह कॉलेज में पढ़ने गई।

वहाँ उसने गरीब बच्चों के बारे में पढ़ना शुरू किया। उसने कामकाजी बच्चों के इतिहास के बारे में जानकारियाँ इकट्ठा की।

फ्लॉरेंस की माँ को यह ठीक नहीं लगा। उन्हें लगा कि यह सब देखने के लिए वह बहुत छोटी है।

पर उसके पिता ने कहा कि बच्चों का जीवन तब तक नहीं सुधरेगा, जब तक लोग गरीब बच्चों की ज़िन्दगियों के बारे में नहीं जानेंगे।

फ्लॉरेंस अपने पिता की बात कभी नहीं भूली।

उसने तय किया कि वह गरीब बच्चों की सच्चाई को उजागर करते हुए ही अपना जीवन बिताएगी।

1911 में पिटस्टन, पैन्सिलवेनिया में 13 साल का विलि ब्रायडन एक कोयले की खान में, धरती की सतह के 500 फीट नीचे कई-कई घंटों तक काम करता था।

खान अंधेरी और सीलन भरी थी। उसकी हवा में कोयले का बारीक बुरादा घुला होता था।

विलि का काम यह था कि वह खान की सुरंग में अकेले बैठ कोयले से भरे डब्बों के आने का इंतज़ार करे।

जब उसे पटरियों पर लुढ़कते डब्बे की आवाज़ सुनाई देती तब उसे फुर्ती से खड़े हो गाड़ी के लिए दरवाज़ा खोलना होता था।

अगर वह दरवाज़ा खोल फौरन ही पटरियों से परे न कूद जाता तो डब्बा उसे टक्कर मार सकता था।

उस समय खानों में कई लड़के सुबह सात बजे से रात सात बजे तक कई तरह के काम करते थे।

पर इस मशक्कत के बावजूद विलि की आमदनी इतनी नहीं थी कि उसका परिवार दिन का खाना तक जुटा सके।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद फ्लॉरेंस ने अपना कुछ समय यात्रा और अध्ययन करने में बिताया।

इसके बाद उसकी शादी हुई और तब तीन बच्चे हुए।

1891 में जब फ्लॉरेंस की उम्र 32 साल की हुई उसने अपने पति को छोड़ दिया।

वह अपने बच्चों के साथ शिकागो चली आई।

शिकागो में कई कारखाने थे जहाँ लोग तरह-तरह की चीज़ें बनाते थे।

वे इन कारखानों में कपड़े, मीठी गोलियाँ, किताबें, बोतलें, गद्दे, छुरियाँ और जीने के लिए जो तमाम दूसरी चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है, वे बनाई जाती थीं।

इनमें से कई कारखानों में बच्चे भी काम करते थे। इन कामकाजी बच्चों में कुछ तो महज पाँच ही साल के थे।

वे अंधेरे कमरों में खतरनाक मशीनों के साथ घंटों मशक्कत करते थे।

उनको खास मज़दूरी नहीं दी जाती थी, पर मेहनत उनसे कड़ी करवाई जाती थी।

उनके माँ-बाप भी काम करते थे।

इस सबके बावजूद कई माता-पिता अपने बच्चों के लिए रोटी-कपड़े तक का जुगाड़ तब तक नहीं कर पाते थे जब तक बच्चे भी काम न करें।

फ्लॉरेंस ने यह सब करीब से देखा और वे गुस्से से भर गईं।

उन्होंने बच्चों के हित में लड़ने का फैसला किया।

वे उन कानूनों को लाना चाहती थीं जो बच्चों को काम करने से रोकें।

पर कानून बदलना आसान काम नहीं था। फ्लॉरेंस जानती थीं कि उन्हें कानून बनाने वालों को ज़मीनी सच्चाई से वाकिफ़ करवाना होगा। यह साफ करना होगा कि गरीब और बीमार बच्चे स्कूल जा पढ़ाई करने के बदले काम करने पर मजबूर हैं।

वे यह भी जानती थीं कि सबसे पहले उन्हें खुद जानकारियाँ इकट्ठा करनी होगीं। सो उन्होंने शिकागो के गरीबों के बारे में तथ्य जुटाने की ठानी।
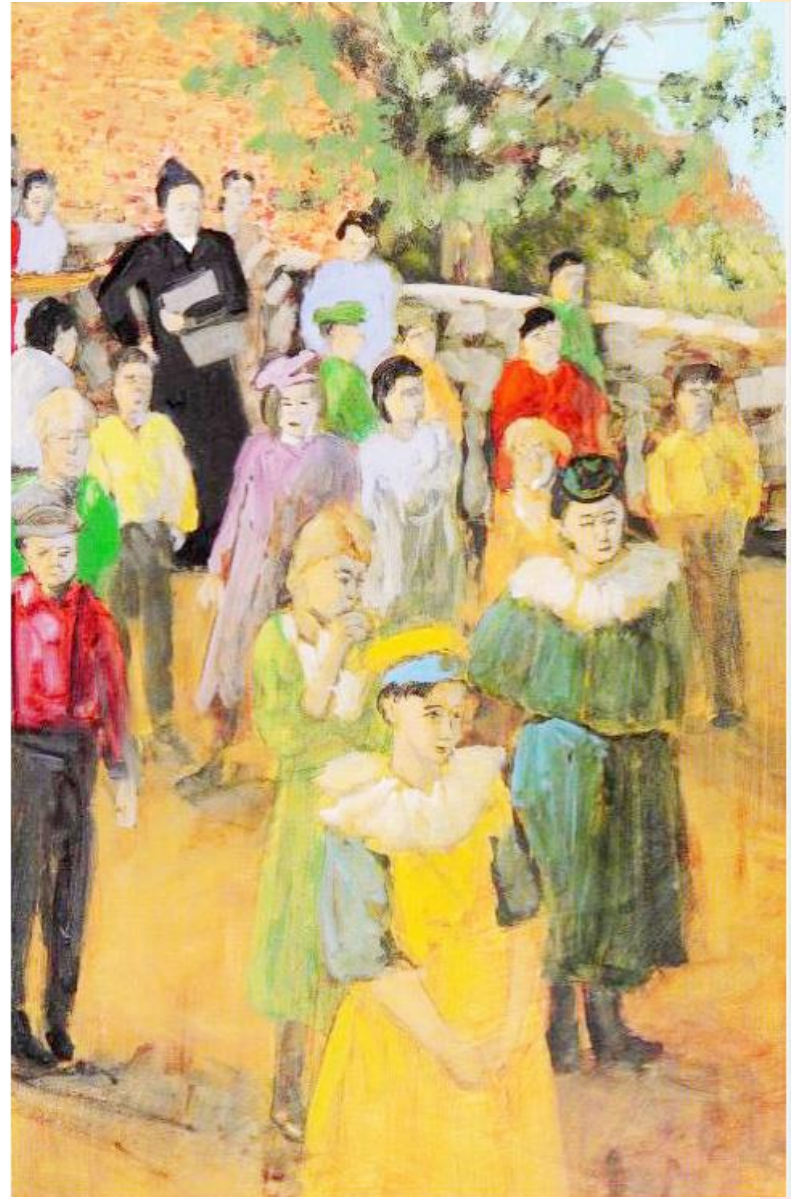
1891 में शिकागो के गरीबों के बारे में जानकारी पाने की एक ही सही जगह थी - हल-हाउस।

हल-हाउस में कर्मठ स्त्रियों का एक समूह जेन एडम्स के नेतृत्व में काम करता और रहता था।

ये स्त्रियाँ शहर की सबसे पेचीदा समस्याओं को सुलझाने के काम में जुटी थीं।

जेन ने फ्लॉरेंस का स्वागत किया और फौरन काम में लगा दिया।

दरअसल सरकार अमरीका के सबसे बड़े शहरों में बसे गरीबों का अध्ययन करवाना चाहती थी।

जेन ने फ्लॉरेंस से कहा कि वह शिकागो की गरीब बस्तियों में जाए और उन पर एक रिपोर्ट तैयार करे।
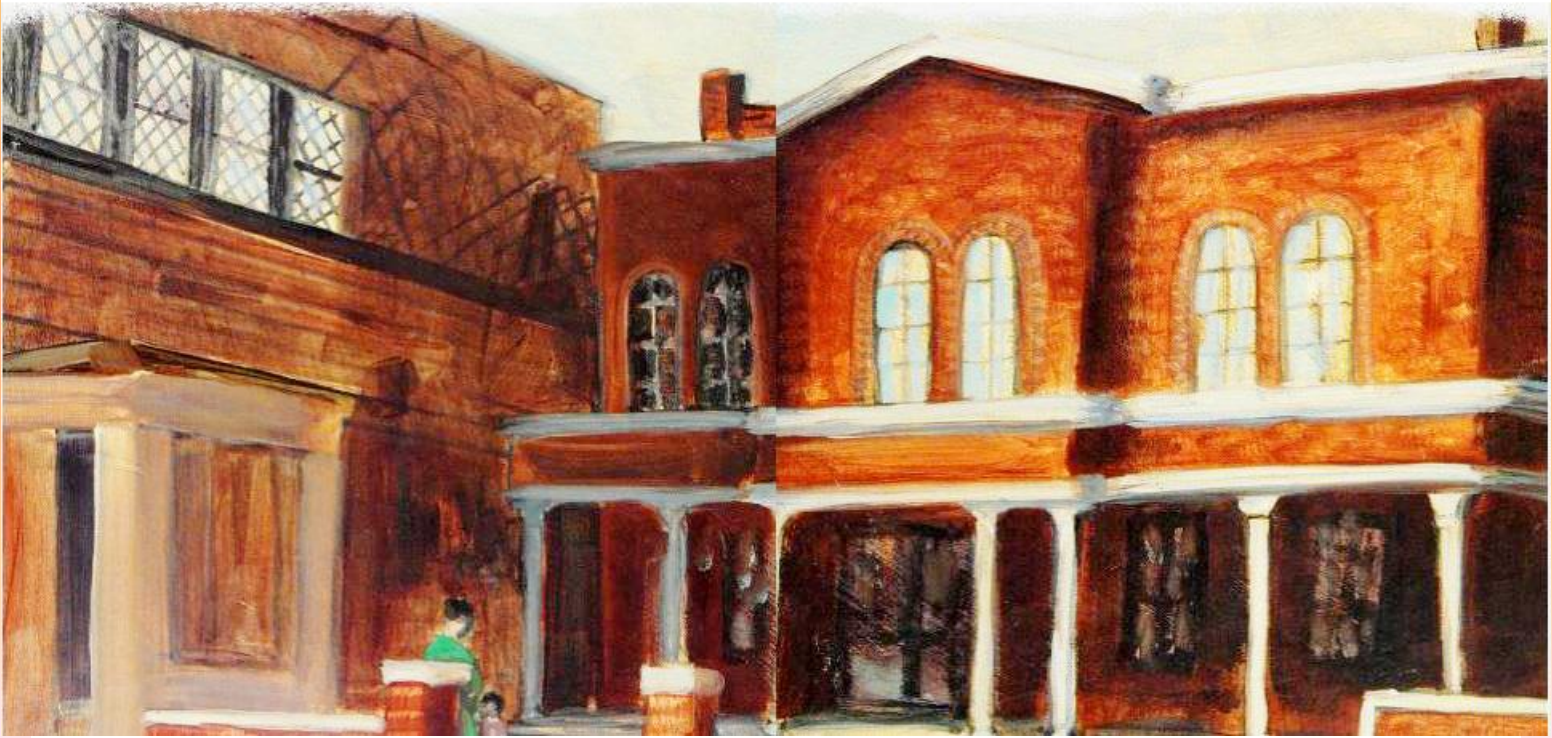
उस ज़माने में अधिकतर लोग गरीबों पर ध्यान नहीं देते थे। सो फ्लॉरेंस को जो तथ्य और आंकड़े जुटाने थे वे उन्हें किताबों में नहीं मिले। उन्हें वे खुद ही तलाशने थे।

फ्लॉरेंस और उनके साथी शहर की सबसे गरीब बस्तियों में गए। उन्होंने दरवाज़े खटखटाए और लोगों से बातचीत की। उन्होंने कई-कई सवाल पूछे।

वे हर घर में पूछते कि वहाँ कितने बच्चे रहते हैं, माँ-बाप कितना पैसा कमाते हैं। यह पूछते कि बच्चे काम करते हैं या स्कूल जाते हैं।

वे इन सारी जानकारियों और आंकड़ों को दर्ज कर लेते। जब वे सैकड़ों घरों में जा चुके तब फ्लॉरेंस ने सारे तथ्यों और आंकड़ों का संकलन किया।
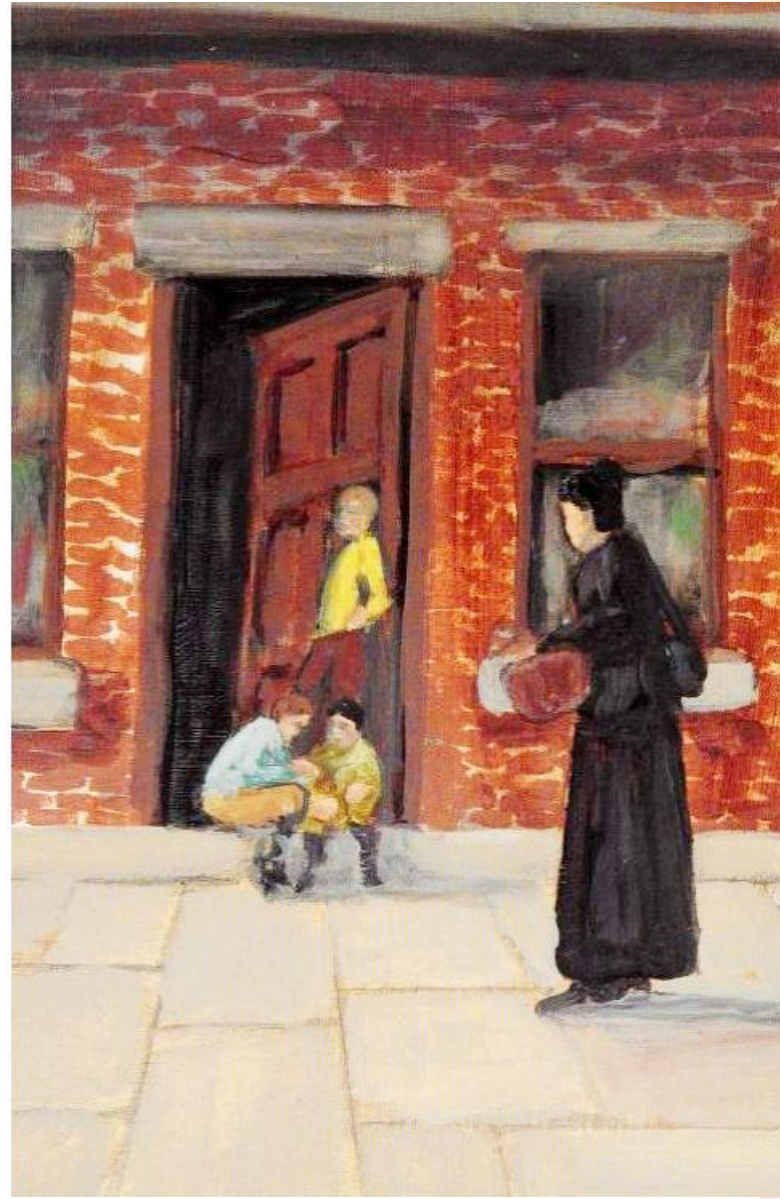
फ्लॉरेंस ने जो कुछ जाना उससे वे बेहद परेशान हुईं। उन्होंने पाया कि चौदह बरस से कम उम्र के तमाम बच्चे स्कूल न जाकर काम करते हैं। उन्होंने यह भी ग़ौर किया कि वयस्क और बच्चे, सभी बड़ी ही ख़राब स्थितियों में काम करने पर मजबूर हैं।

उनके कार्यस्थल अक्सर शोरगुल वाले थे। कुछ कारखाने तो बेहद गंदे थे, तो कुछ में खिड़कियाँ तक नहीं थीं कि रोशनी और ताज़ी हवा आ सके। कई मशीनें खतरनाक थीं। कई लोग मशीनों के कारण दुर्घटना का शिकार हो जाते थे। अगर दुर्घटना में वे अपना हाथ या पैर खो देते तो उन्हें काम करना बन्द करना पड़ता था।

बर्टी बैटसन महज दस साल की थी और वह पिछले तीन सालों से दक्षिण कैरोलाइना के डिलन में एक कपड़ा मिल में काम कर रही थी।

यह नन्ही दिन भर कताई मशीनों की लम्बी कतारों के आगे-पीछे घूमती। जहाँ कहीं भी धागा टूटा नज़र आता उसे जोड़ती।

बर्टी सप्ताह में छह दिन, प्रति दिन दस से बारह घंटे काम करती थी।

फ्लॉरेंस ने जो रिपोर्ट लिखी उसमें सही तथ्य और आंकड़े थे।

उन्होंने जिन लोगों से बात की थी उनकी दुखद कहानियाँ भी रिपोर्ट में जोड़ीं। तब यह रिपोर्ट कानून बनाने वालों को सौंप दी गई।

पर फ्लॉरेंस बस इतना भर कर रुकी नहीं।

जहाँ भी संभव होता फ्लॉरेंस इस मसले पर बोलतीं।

उन्होंने गिरजों में, बैठकों में और क्लबों में कामकाजी बच्चों के बारे में बोला।

वे लोगों के समूहों को शहर की गरीब बस्तियों में ले जाने लगीं, ताकि वे खुद देख सकें कि गरीब लोग कैसे जीते और काम करते हैं।
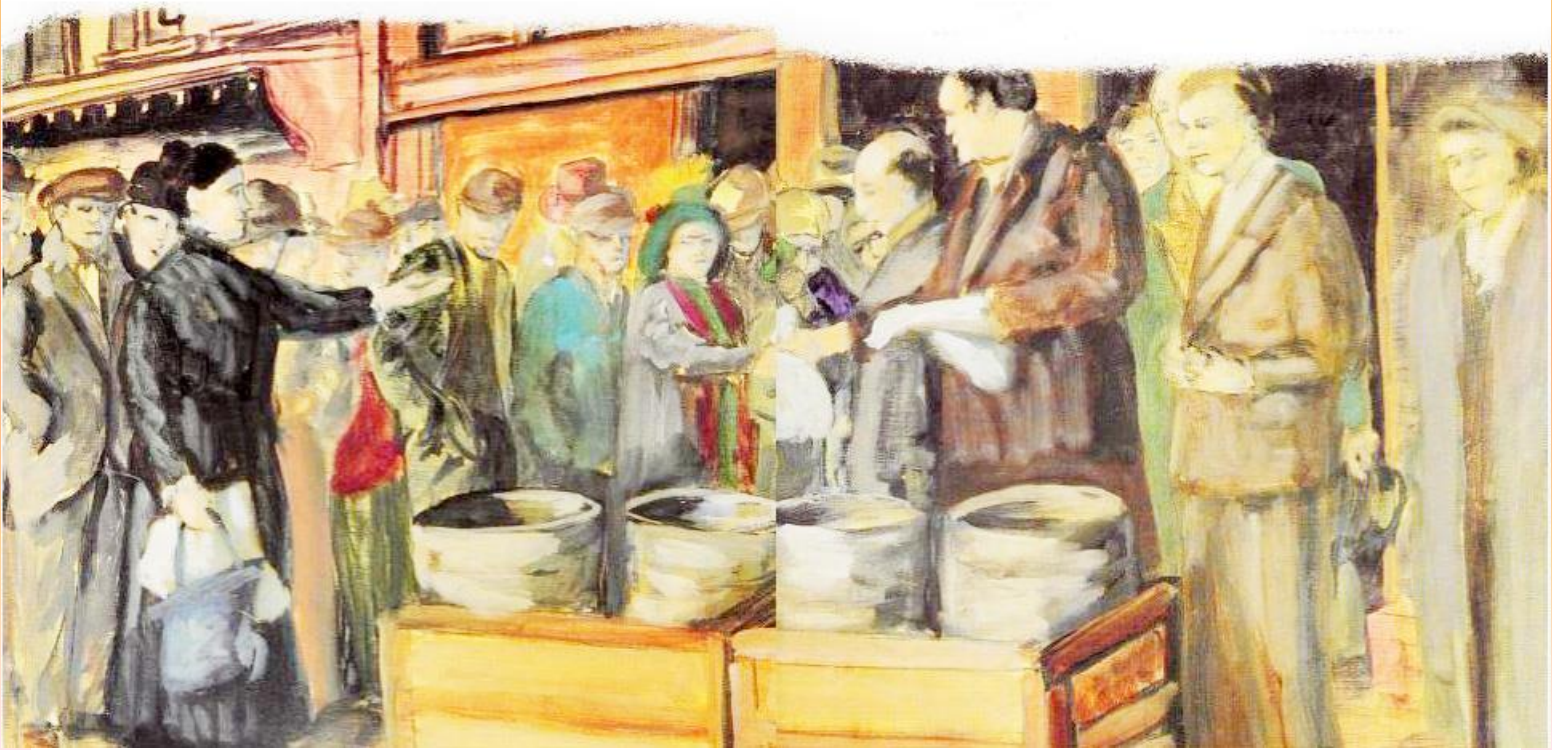
फ्लॉरेंस का कद लम्बा था, आँखें काली और भूरे बाल घने और सुन्दर थे।

वे हमेशा सादे काले कपड़े पहनती थीं। पर जब वह नाराज़ होतीं तो डरावनी लग सकती थीं।

उनकी मुलायम और गहरी आवाज़ अमूमन तो बिलकुल शान्त होती थी, पर ज़रूरत पड़ने पर दमदार तरीके से गरज भी सकती थी।

फ्लॉरेंस अपने शब्द बड़ी सावधानी से चुनतीं और तेज़ी से सोच सकती थीं। वे जो कुछ कहतीं वह उनके विरोधी तक ध्यान से सुनते थे।
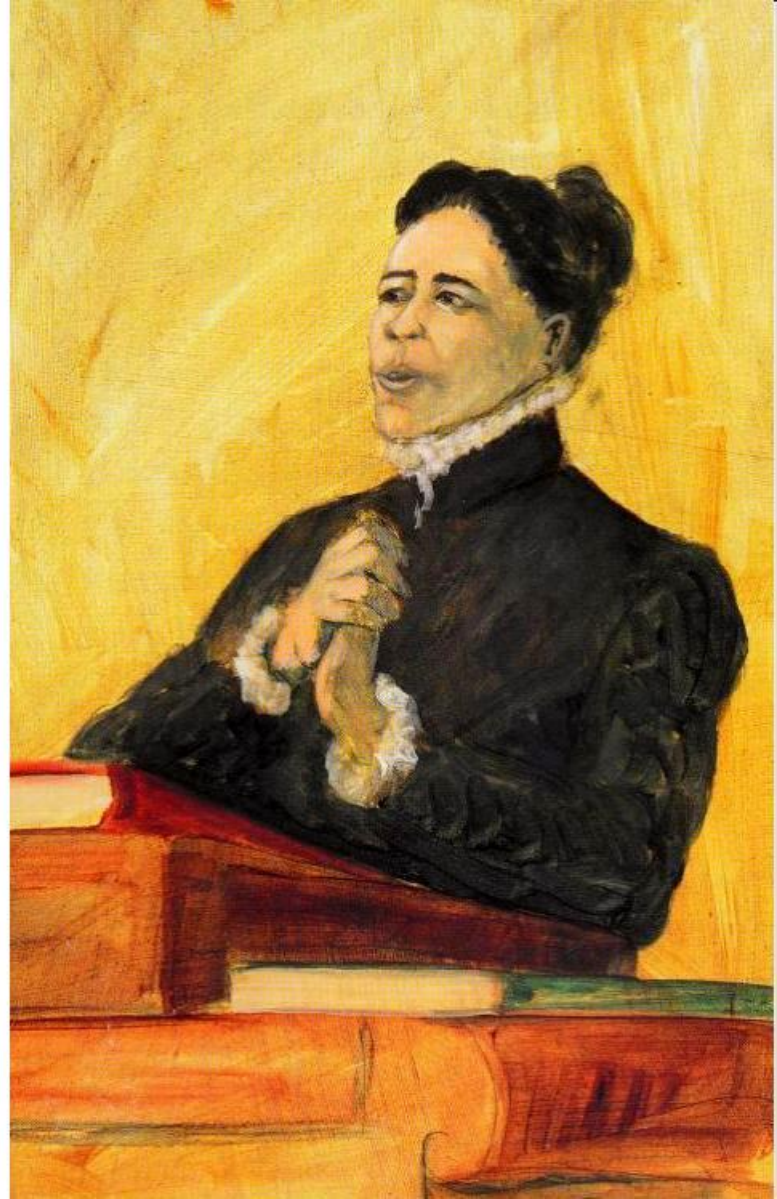
1893 में फ्लॉरेंस की रिपोर्ट पढ़ने के बाद कानून बनाने वालों ने एक नया कानून बनाया जो मज़दूरों से आठ घंटों से ज़्यादा काम करवाने की मनाही करता था।

यह कानून 14 बरस से कम उम्र के बच्चों को भी काम करने से रोकता था।

नए कानून में यह भी कहा गया था कि कारखानों के मालिक इन कानूनों का पालन करें यह सुनिश्चित करने किसी को वहाँ निरीक्षण करने भी जाना होगा।

सो इलिनॉय के गवर्नर ने फ्लॉरेंस को प्रथम मुख्य कारखाना निरीक्षक तैनात किया।

फ्लॉरेंस ने जो काम सबसे पहले किए उनमें एक था छोटे बच्चों को एक कारखाने में काम करने जाने से रोकना। इस कारखाने में बच्चे फोटो फ्रेम को रंगा करते थे। वहाँ जिस रंग का इस्तेमाल होता था वह ज़हरीला था।

रंग के साथ इतने करीब से काम करने के कारण बच्चे बीमार हो रहे थे।

फ्लॉरेंस इस समस्या को ले एक वकील के पास गईं। वे चाहती थीं कि वकील कराखाने के मालिक पर दावा ठोकने में उनकी मदद करे।

वकील ने साफ इन्कार कर दिया। उसने कहा कि उसके पास करने को कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम हैं।

फ्लॉरेंस को समझ आ गया कि वे वकीलों की मदद पर निर्भर नहीं रह सकतीं।

उन्होंने खुद वकालत की पढ़ाई करने की ठानी ताकि अपने मामलों को खुद अदालत में लड़ सकें।

उन दिनों बहुत ही कम औरतें पढ़ने के लिए कॉलेज जाती थीं। और वकालत की पढ़ाई तो और भी कम महिलाएं करती थीं।

पर फ्लॉरेंस ने इसकी कोई परवाह न की। उन्होंने वकालत पढ़ना शुरू किया। कुछ बरसों में उन्हें वकालत की डिग्री मिल गई।

यह सब फ्लॉरेंस ने इसलिए किया क्योंकि कानून बनाने या उसे बदलने के पहले कानूनों को ठीक से समझना ज़रूरी होता है।

कानूनी शिक्षा लेना फ्लॉरेंस के लिए जीवन भर उपयोगी सिद्ध हुआ।

सेन्ट लुइस, मिसिसिपी में कई बच्चे एक डिब्बाबंदी कारखाने में काम करते थे।

इनमें कुछ तो महज तीन साल के थे।

वे दरसल झींगा मच्छी के खोल उतारने में अपने परिवार की मदद करते थे।

झींगा बर्फ पर रखी जाती थी। सर्दियों में बच्चों की उंगलियाँ अकड़ जाया करती थीं।

कठोर खोल से बच्चों की उंगलियाँ कटतीं और जब झींगा का रस उन घावों पर लगता तो खूब जलन मचती।

कुछ डिब्बाबंदी कारखानों में परिवारों को रहने और काम करने के लिए छोटी, गंदी झोपड़ियाँ दी जाती थीं। इनमें न बिजली की व्यवस्था थी न पानी की।

परिवार को खोल उतारे गए झींगा की संख्या के हिसाब से भुगतान किया जाता था।

ज़ाहिर है कि अपना गुज़ारा चलाने के लिए उन्हें देर तक और तेज़ रफ्तार से काम करना पड़ता था।
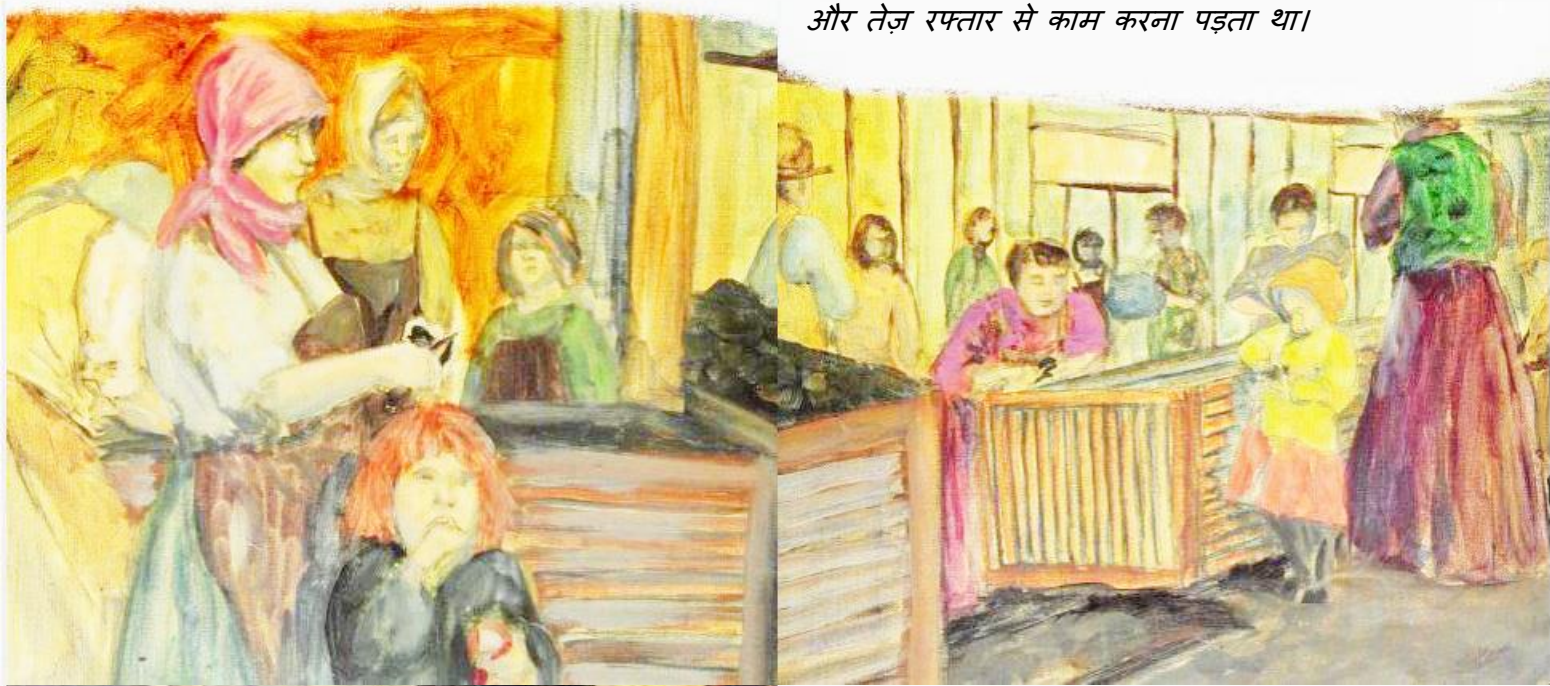
मुख्य कारखाना निरीक्षक के रूप में फ्लॉरेंस ने जो कुछ भी देखा उसे वे दर्ज करती गईं।

उनके काम में जोखिम भी था।

एक बार उन्हें मालूम पड़ा कि कपड़ों की सिलाई के एक कारखाने में कुछ कारीगरों को चेचक का रोग हुआ है।

ज़ाहिर था कि वे जो कपड़े सिल रहे थे वे कीटाणुओं से संक्रमित थे।

फ्लॉरेंस जानती थीं कि जो लोग उन कपड़ों को खरीदेंगे वे भी बीमार हो मर तक सकते हैं।

वे उस कारखाने में घुसीं जहाँ उन्हें भी चेचक का रोग हो सकता था। उन्होंने इस खतरे की परवाह न की। वे बेझिझक घुसीं और कारखाना मालिक से उसे बन्द करवाया।

कई बार कारखानों के मालिक फ्लॉरेंस से नाराज़ हो जाते थे। दरअसल वयस्कों के बदले बच्चों से काम करवाना उन्हें सस्ता पड़ता था।

वे नए कानूनों की पालना करना ही नहीं चाहते थे।

एक बार तो फ्लॉरेंस को कारखाने में घुसने से रोकने के लिए किसीने बन्दूक तक दाग दी।

पर फ्लॉरेंस को रोका न जा सका। वे अगले चार सालों तक भरसक यह सुनिश्चित करती रहीं कि कारखानों के मालिक नए कानून का पालन करें।

फ्लॉरेंस ने गरीबों की मदद करने के कई दूसरे उपाय भी तलाशे।

उन्हें लगा कि आम जनता को यह पता होना चाहिए कि कारखानों के मालिक अपने कामगारों से कैसा बरताव करते हैं।

क्योंकि फ्लॉरेंस का मनना था कि अगर लोगों को यह पता चलेगा कि श्रमिकों के साथ कितना बुरा सुलूक किया जाता है तो वे उन कारखानों में बनी चीज़ों को खरीदना ही बन्द कर देंगे। वे उन चीज़ों को तब तक नहीं खरीदेंगे जब तक मालिक अपना बरताव बदल न दें।

कई लोग फ्लॉरेंस से सहमत थे।

ऐसे लोगों ने देश भर में समूह बनाए ताकि लोगों को यह पता चल सके कि किन कारखानों में बालश्रम का इस्तेमाल किया जाता है, या वयस्क कामगारों से बुरा सुलूक किया जाता है।

ये समूह कनज़्यूमर लीग (उपभोक्ता संघ) कहलाते थे। उपभोक्ता वे होते हैं जो चीज़ों को खरीद उनका इस्तेमाल करते हैं।

फ्लॉरेंस इलिनॉय के उपभोक्ता संघ से जुड़ीं।

तब 1898 में फ्लॉरेंस न्यू यॉर्क चली आईं ताकि राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ को नेतृत्व दे सकें।

उन्होंने देश भर में यात्राएं कीं। भाषण दिए और जनता को संघ के काम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कामगारों का मेहनताना बढ़ना चाहिए। उनके काम के घंटे कम होने चाहिए और बालश्रम खत्म किया जाना चाहिए।

उनकी बातें सुन कई लोग परेशान और नाराज़ हुए। और उनमें से कई ने चुनावों में ऐसे उम्मीदवारों को मत दिया जिनसे वे कानून बदलने की उम्मीद रखते थे।

कई बच्चे अपने घरों में ही काम करते थे।

अक्सर कारखानों के मालिक लोगों को ऐसे काम सौंपते जो घर में पूरे किए जा सकते हों।

औरतें और बच्चे हर दिन कई-कई घंटे रेशम के कपड़े से फूल बनाने में गुज़ारते, या कमीजों पर बटन टाँकने का काम करते। छोटे बच्चे भी परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ इन कामों में जुटते थे।

कुछ बच्चे तो स्कूल से लौटने के बाद कमज़ोर रोशनी में सिलाई का काम करते। वे इतने थक जाते थे कि अक्सर स्कूल में बैठे-बैठे ही उनको नींद आ जाती।

1908 में न्यू यॉर्क की सलिवन स्ट्रीट में, तीन बच्चे अपनी माँ के साथ हर दिन 1600 रेशम के फूल बनाते थे।

इस मशक्कत से उनकी जितनी कमाई होती उससे बमुश्किल ही दिन के खाने का जुगाड़ हो पाता था।

फ्लॉरेंस ने बच्चों के हित में एक और मुहिम छेड़ी। उन्होंने संयुक्त राज्य बाल ब्यूरो की स्थापना करने में मदद की।

वे समूचे संयुक्त राज्य अमरीका के बच्चों के बारे में तथ्य जानना चाहती थीं।

बाल ब्यूरो ने पहला काम जो हाथ में लिया वह था यह जानना कि देश में शिशु अवस्था में ही इतने बच्चों की मौत क्यों हो जाती है। सच तो यह था कि किसी को यह पता तक नहीं था कि हर साल दरअसल कितने शिशु मरते हैं।

जब ब्यूरो ने शिशु मृत्युओं की गिनती की तो पता चला कि एक वर्ष में ढ़ाई लाख शिशुओं की मौत हुई थी। यह संख्या लोगों के अनुमान से कहीं ज़्यादा थी। बाल ब्यूरो की रिपोर्ट से साफ हो गया कि नई माताओं को बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की दरकार है।

कांग्रेस (संसद) गरीब माताओं और उनके बच्चों के लिए वित्त उपलब्ध करवाने पर राज़ी हुई।

1932 में जब फ्लॉरेंस कैली की मृत्यु हुई, तब तक उनका काम पूरा नहीं हो सका था।

बल्कि उन्होंने जिन कानूनों को बनवाने में मदद की थी उनमें से कुछ बाद में या तो बदल दिए गए या उन्हें रद्द ही कर दिया गया।

अमरीकी संसद ने दो बार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम करवाने को रोकने का कानून पारित किया था। पर दोनों ही बार सर्वोच्च अदालत ने कानून लागू नहीं होने दिया था।

पर अंततः यह बात इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है कि फ्लॉरेंस कैली अपनी कुछ लड़ाइयाँ हारीं। क्योंकि आगे आने वाले समय में दूसरे लोगों ने उन ज़रूरी कानूनों को पारित करवाने के तरीके तलाशे। और यह हासिल करने के लिए उन्होंने जो रास्ता अपनाया वह ठीक फ्लॉरेंस का रास्ता ही था। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि लोग तथ्यों और आँकड़ों को जानें।

1915 में स्टर्लिंग, कोलराडो में चुकंदर के पत्ते काटने का काम बच्चे ही करते थे।

लड़के और लड़कियाँ हर दिन 12 घंटों तक बड़ी-बड़ी मुड़ी हुई छुरियों से चुकंदर के ऊपरी पत्ते काटा करते थे।

जो परिवार यह काम करते वे काम की तलाश में एक से दूसरे खेत जाते थे।

इसके बावजूद वे इतना नहीं कमा पाते थे कि अपना घर खरीद सकें। सो बरसात हो या चिलचिलाती धूप, वे हर मौसम में दूसरों के खेतों में काम करने पर मजबूर थे।
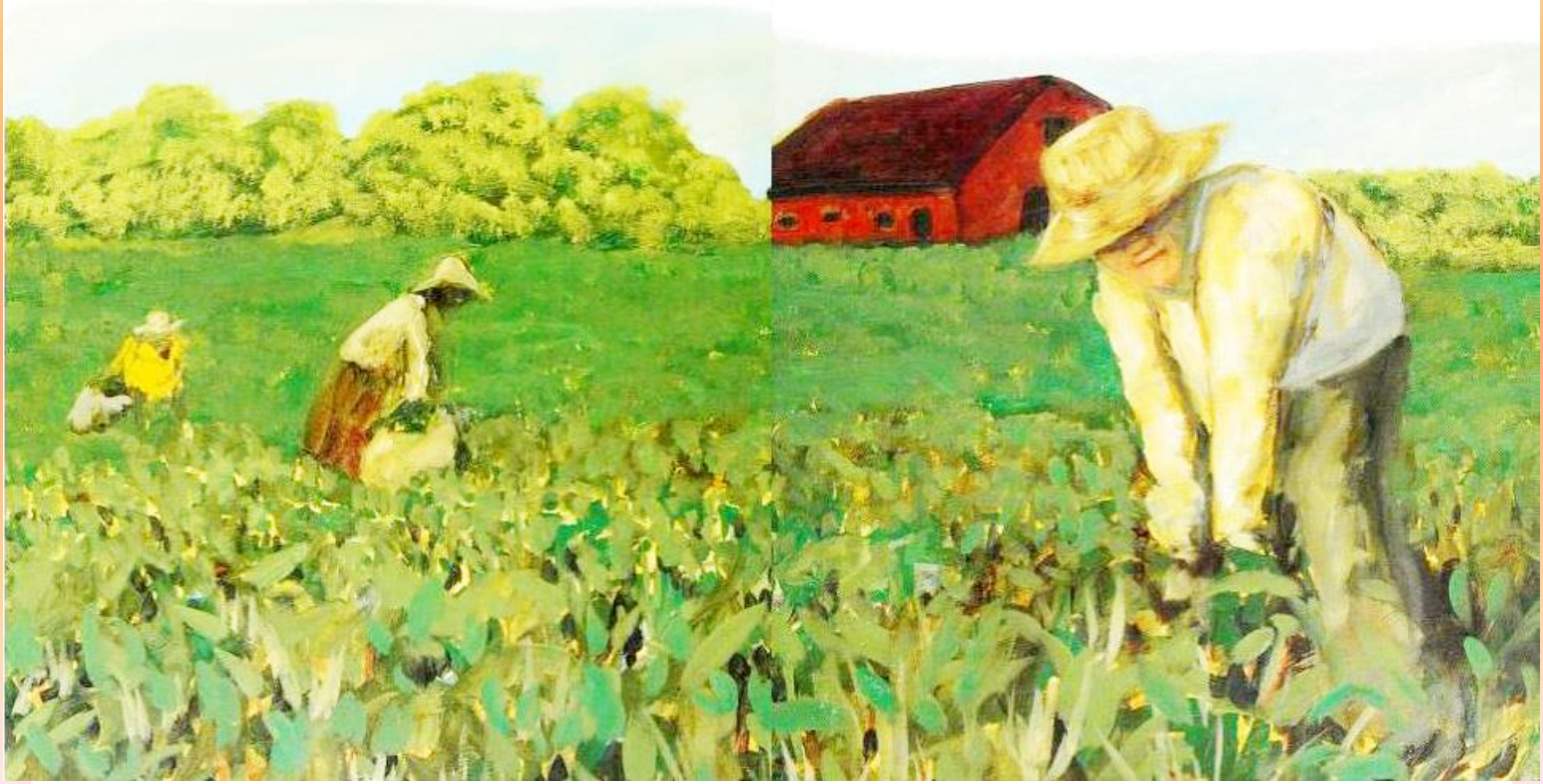
पर आज हमारे पास ऐसे कानून हैं जो बच्चों को काम करने से रोकते हैं।

ऐसे कानून भी हैं जो बच्चों को स्कूल जा पढ़ने का अधिकार देते हैं।

और ऐसे भी कानून हैं जो कामगारों की दुर्घटनाओं और बीमारियों से सुरक्षा करते हैं।

इस अर्थ में फ्लॉरेंस अपने काम में सफल रहीं।
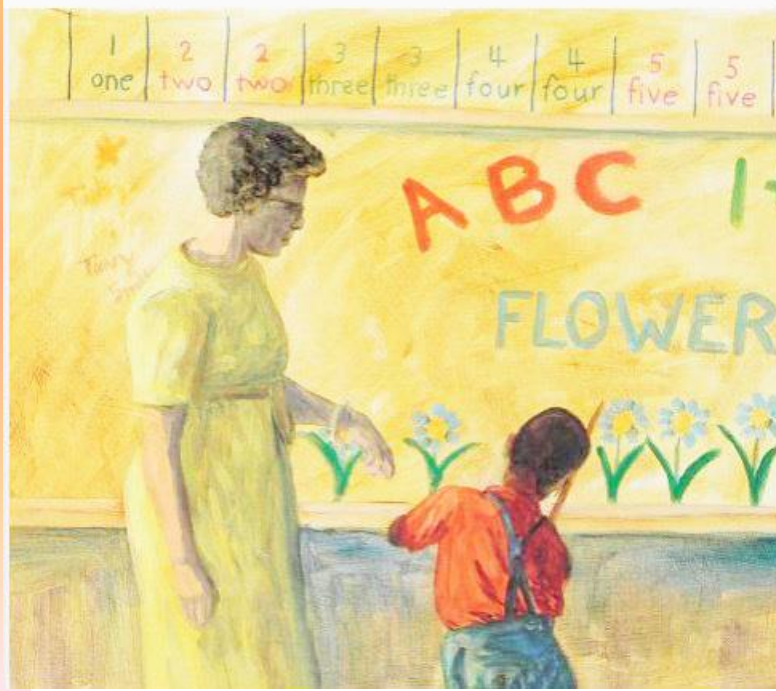
पर कुछ जगहों पर बच्चे आज भी कड़ी मेहनत करते हैं। वे देर रात तक, खतरनाक स्थितियों में काम करते हैं। वे स्कूल नहीं जाते।

फ्लॉरेंस कैली ने इस सबको रोकने की भरसक कोशिश की थी। उनसे सीख ले लोग दूसरे बच्चों के लिए स्थितियाँ बेहतर करने की कोशिश करते रहेंगे।

फ्लॉरेंस कैली के जीवन में महत्वपूर्ण तिथियाँ

1859 फिलैडैल्फिया में फ्लॉरेंस का जन्म (उनकी पक्की जन्म तिथि अनिश्चित है)।

1859-1876 वे फिलैडैल्फिया में पली-बढ़ीं। जब स्वस्थ होतीं तो क्वेकर स्कूल में पढ़ने जातीं।

1876 इथैका, न्यू यॉर्क, स्थित कॉरनैल विश्वविद्यालय में दाखिला।

1883 स्विट्ज़रलैंड के ज़्युरिख विश्वविद्यालय में अध्ययन।

1886 अमरीका लौट न्यू यॉर्क में रहने लगीं।

1891 शिकागो चली आईं और वहाँ हल-हाउस में रहने और काम करने लगीं।

1893 इलिनॉय की मुख्य कारखाना निरीक्षक बनीं।

1895 एवनस्टन, इलिनॉय स्थित नॉर्थवैस्टर्न विश्वविद्यालय से वकालत की डिग्री पाई।

1899 नैशनल कनज़्यूमर लीग को नेतृत्व देने न्यू यॉर्क गईं।

1906-1912 संयुक्त राज्य बाल ब्यूरो के गठन में मदद की।

1932 न्यू यॉर्क में देहान्त।

पर कुछ जगहों पर बच्चे आज भी कड़ी मेहनत करते हैं। वे देर रात तक, खतरनाक स्थितियों में काम करते हैं। वे स्कूल नहीं जाते।

फ्लॉरेंस कैली ने इस सबको रोकने की भरसक कोशिश की थी। उनसे सीख ले लोग दूसरे बच्चों के लिए स्थितियाँ बेहतर करने की कोशिश करते रहेंगे।